Vol. 14, Sp. Issue: 1, December: 2025
ISSN: (P) 2347-5412 ISSN: (O) 2320-091X

भारतीय ज्ञान प्रणाली के माध्यम से शिक्षक निर्माण क्षमता एवं व्यावसायिक विकास

श्रीमती नीरू त्रिपाठी

सहायक प्राध्यापक

संत हरकेवल शिक्षा महाविद्यालय, अम्बिकापुर, सरगुजा, (छ.ग.)

सारांश

यह अध्ययन **IKS** भारतीय ज्ञान प्रणाली के माध्यम से शिक्षक निर्माण क्षमता तथा उनके व्यावसायिक विकास की प्रक्रिया को समझने पर केन्द्रित है। **IKS** शिक्षकों को पारंपरिक भारतीय ज्ञान को आधुनिक शिक्षा के साथ एकीकृत करने का अवसर प्रदान करती है, जिसके माध्यम से वे शिक्षण को अधिक प्रभावी, विद्यार्थी-केंद्रित और अनुभवात्मक बना सकते हैं। यह प्रणाली शिक्षकों को छात्रों की आवश्यकताओं को उचित रूप से समझने, प्रासंगिक पाठ योजनाएँ तैयार करने और कक्षा में नवाचार आधारित शिक्षण पद्धतियों का उपयोग करने में सक्षम बनाती है।

शिक्षक समाज के निर्माण में वह महत्वपूर्ण माध्यम हैं, जो ज्ञान परंपरा को निरंतर आगे बढ़ाते हैं। जब शिक्षक आधुनिक तकनीक, डिजिटल संसाधनों और **IKS** आधारित शिक्षण का उपयोग करते हैं, तो शिक्षण न केवल रोचक बनता है, बल्कि विद्यार्थियों की वैचारिक एवं व्यावहारिक क्षमताओं को भी सुदृढ़ करता है। **IKS** शिक्षण प्रक्रिया में प्राचीन भारतीय पद्धतियों तथा आधुनिक वैज्ञानिक दृष्टिकोण दोनों को सम्मिलित कर शिक्षक-व्यावसायिकता को एक नई दिशा प्रदान करती है।

भूमिका

भारतीय ज्ञान प्रणाली के माध्यम से शिक्षक निर्माण क्षमता एवं व्यावसायिक विकास आज की शैक्षिक चुनौतियों का समाधान प्रस्तुत करने वाला एक आवश्यक शैक्षिक उपक्रम है। यह प्रणाली शिक्षकों को भारतीय शैक्षणिक परंपराओं, सांस्कृतिक मूल्यों और वैज्ञानिक सोच से जोड़ते हुए शिक्षण को अधिक सार्थक, संदर्भपूर्ण और अनुभवात्मक बनाती है। **IKS** शिक्षकों को वैश्विक युग की मांगों के अनुरूप स्वयं को अद्यतन रखने, शैक्षिक नीतियों के अनुसार शिक्षण पद्धतियों में नवाचार लागू करने तथा विद्यार्थियों की विविध आवश्यकताओं के अनुसार समावेशी शिक्षण प्रदान करने हेतु प्रेरित करती है।

IKS का अर्थ

IKS अर्थात भारतीय ज्ञान प्रणाली, भारत की हजारों वर्षों से विकसित समृद्ध सांस्कृतिक, वैज्ञानिक, दार्शनिक और तकनीकी परंपराओं का समग्र रूप है। यह केवल ज्ञान का संग्रह नहीं है, बल्कि जीवन और समाज को समझने की एक समग्र, नैतिक और वैज्ञानिक पद्धति है। **IKS** में गणित, खगोल, विज्ञान, चिकित्सा, कला, साहित्य, दर्शन, वास्तुकला तथा समाजशास्त्र आदि विविध क्षेत्रों से संबंधित पारंपरिक ज्ञान सम्मिलित है। इसका उद्देश्य इस ज्ञान को संरक्षित करते हुए इसे आधुनिक शिक्षा एवं नवाचार से जोड़ना है।

परिभाषाएँ

1. **कशीनाथ उपाध्याय (Kashinath Upadhyaya)** "भारतीय ज्ञान परंपरा वह प्रणाली है जिसमें आत्मा, प्रकृति, समाज, भाषा, संस्कृति और अस्तित्व को एक-दूसरे से अविभाज्य मानकर ज्ञान का विकास किया गया है।"
2. **प्रो. कपिल कपूर (Prof. Kapil Kapoor)** "भारतीय ज्ञान परंपरा अखंड, बहुविषयक तथा मानव-केंद्रित प्रणाली है, जो

Vol. 14, Sp. Issue: 1, December: 2025
ISSN: (P) 2347-5412 ISSN: (O) 2320-091X

सत्य, धर्म, कल्याण और समग्र जीवन के विकास की दिशा में निरंतर प्रवाहमान है।"

अध्ययन के उद्देश्य

1. शिक्षक के व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास का अध्ययन करना।
2. शिक्षक की मार्गदर्शन क्षमता को विकसित करने में **IKS** की भूमिका का विश्लेषण करना।
3. सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण में शिक्षक की भूमिका का मूल्यांकन करना।
4. समग्र एवं बहुविषयक दृष्टिकोण विकसित करने में **IKS** के प्रभाव का अध्ययन करना।
5. आलोचनात्मक सोच एवं समस्या-समाधान कौशल में वृद्धि का परीक्षण करना।
6. नैतिक मूल्यों और सदाचार को विकसित करने में **IKS** आधारित शिक्षण की भूमिका की पहचान करना।
7. अनुसंधान और नवाचार को बढ़ावा देने में **IKS** की उपयोगिता का अध्ययन करना।

अध्ययन की आवश्यकता

1. **शिक्षक- एक गुरु के रूप में:** शिक्षक केवल ज्ञान-दाता नहीं, बल्कि मूल्य, संस्कृति और नेतृत्व कौशल के संवाहक भी होते हैं।
2. **चरित्र निर्माण: IKS** आधारित शिक्षण ईमानदारी, अनुशासन, करुणा और नैतिकता जैसे गुणों के विकास को बढ़ावा देता है।
3. **राष्ट्र निर्माण में योगदान:** भारतीय ज्ञान प्रणाली सामाजिक, सांस्कृतिक और नैतिक रूप से सक्षम नागरिक बनाने में महत्वपूर्ण है।
4. **नई शिक्षा नीति (NEP 2020) का एकीकरण: IKS** NEP–2020 के 'समग्र विकास' एवं 'भारतीयता से जुड़े शिक्षण' की अवधारणा को मजबूत करता है।
5. **पाठ्यक्रम और शिक्षण विधियों में सुधार:** यह शिक्षण को व्यावहारिक, रोचक और विद्यार्थी-केंद्रित बनाता है।
6. **गुणवत्तापूर्ण एवं प्रासंगिक शिक्षा: IKS** की अवधारणा शिक्षा को नैतिक, वैज्ञानिक तथा जीवनोपयोगी बनाती है।

अनुसंधान पद्धति

- **प्रकार:** वर्णनात्मक एवं अवलोकन आधारित
- **दृष्टिकोण:** मिश्रित (गुणात्मक + मात्रात्मक)
- **तकनीक:** अवलोकन, समीक्षा एवं विश्लेषण

भविष्य में उपयोगिता

1. विद्यार्थियों एवं शिक्षकों- दोनों का समग्र व्यक्तित्व विकास।
2. भारतीय सांस्कृतिक एवं भाषाई विरासत का संरक्षण।
3. आधुनिक शिक्षा में प्रासंगिकता और उपयोगिता का विस्तार।
4. अनुसंधान एवं नवाचार आधारित शैक्षणिक प्रथाओं का विकास।
5. तकनीक-समर्थित आधुनिक एवं मूल्याधारित शिक्षा का संवर्धन।

निष्कर्ष

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि **IKS** आधारित शिक्षक-व्यावसायिक विकास मॉडल 21वीं सदी की शिक्षा व्यवस्था के लिए एक सुदृढ़ एवं स्थायी आधार प्रस्तुत करता है। यह शिक्षकों को न केवल अधिक सक्षम और आत्मनिर्भर बनाता है, बल्कि ऐसे नागरिक तैयार करता है जो अपनी सांस्कृतिक जड़ों से जुड़े हुए, नैतिक रूप से सशक्त और वैश्विक चुनौतियों से निपटने के लिए समर्थ हैं। **IKS** का समावेश शिक्षण को मूल्यपरक, नवाचारी और समग्र बनाकर शिक्षा प्रणाली में महत्वपूर्ण परिवर्तन लाने की क्षमता रखता है।

संदर्भ सूची

- तंवर, ए. (*2017*). *भारतीय ज्ञान प्रणाली का शैक्षिक महत्व.* तिलक प्रकाशन।
- देसाई, वी. (*2020*). *भारतीय ज्ञान परंपरा और आधुनिक शिक्षा में एकीकरण.* राष्ट्रीय शैक्षिक शोध परिषद।
- पंचौरी, एम. (*2011*). *भारत में आधुनिक शिक्षा.* रजत प्रकाशन, नई दिल्ली।

Vol. 14, Sp. Issue: 1, December: 2025
ISSN: (P) 2347-5412 ISSN: (O) 2320-091X

- पाण्डेय, जी. (वर्ष निरुपित नहीं). *शिक्षा तकनीक.* राधा पब्लिकेशन, नई दिल्ली।
- शर्मा, आर. (*2020).* NEP 2020 *और भारतीय शिक्षा का परिवर्तन.* इंडियन जर्नल ऑफ़ एजुकेशनल स्टडीज।